पांच तत्व तीन गुन को, जब हुयो ब्रह्मांड को नास ।
तब ब्रज और रास की, ठौर कहां रही खास ॥२५॥

क्योंकि भागवत के अनुसार तीन गुण पांच तत्व वाला चौदह लोकों का यह ब्रह्मांड महाप्रलय में नाश हो जायेगा तो इस ब्रह्मांड वाला मथुरा और वृन्दावन कहां रहेगा और आप भी कहां पहुँचोगे ।

तब लालदास चौंकिया, तैं कहां सुनी ए बात ।
मोहे ठौर बताय देओ, ए कहां पाई सिफत जात ॥२६॥

ऐसे अखंड ज्ञान को सुन कर श्री लालदास जी हैरान रह गए और चतुरा से बोले कि नित्य वृन्दावन और अखंड ब्रज का ज्ञान तुमने कहां से प्राप्त किया है । मुझे भी यह ठिकाना बताओ कि कहां और किस महापुरूष के द्वारा तुमने इस अखण्ड ज्ञान को प्राप्त किया है?

तब चतुरे ने कह्या, कोई साध आए इन ठौर ।
तहां चरचा होत है, ब्रज रास की जोर ॥२७॥

तब चतुरे ने कहा कि ठट्ठे नगर में नाथा जोशी के घर कोई महान पुरूष पधारे हैं । वह हर रोज अपनी चर्चा में विशेषकर अखण्ड योगमाया के ब्रह्माण्ड में बृज तथा रास का वर्णन सुना कर उससे भी परे अक्षर-अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम की चर्चा सुनाते हैं ।

महामति कहें ए साथ जी, ए ठट्ठे की बीतक ।
ए मेहर सैयों पर करी, साहिब सुभानल हक ॥२८॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते है कि हे सुन्दरसाथ जी । इस प्रकार श्री राज जी महाराज ने मेहर करके चतुरा पोहोकरना के द्वारा श्री लालदास जी को माया से निकाल कर अपने चरणों में लिया।

(प्रकरण २४, चौपाई १०५१)

श्री लालदास जी का श्री जी से मिलाप

ए ठट्ठे की बीतक, लालदास की मुलाकात ।
जिन भांत आए मिले, सो ए कहों फेर बात ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि सुन्दर साथ जी ! श्री लालदास जी किस प्रकार श्री जी के चरणों में आये, अब उस बात को कहता हूं ।

Nijanand App

तब लालदासें कह्या, मोकों ले चलो तुम ।
मैं जाए मुलाकात करों, ए रहमत पावें हम ॥२॥

जब चतुरा पोहोकरना के द्वारा लालदास जी ने स्वामी जी के बारे में सुना तो उन्होंने चतुरे से कहा कि मुझे भी उनके चरणों में ले चलो । मैं भी उनके चरणों का दर्शन करके उनकी कृपा से जागृत बुद्धि की इस अखण्ड न्यामत को पाना चाहता हूं ।

मैं उन्हें पूछ तुम्हें ले चलों, बिना उनके हुकम ।
मैं ले जाए ना सकों, तुमको उनके कदम ॥३।

तब चतुरे पोहोकरने ने कहा कि मैं श्री जी से पूछे बिना उनके चरणों में आप को नही ले जा सकता तब श्री लालदास जी ने कहा कि कृपया मेरी खातिर आप अभी जाइए और मेरे लिए प्रार्थना करके चरणों में आने के लिए आज्ञा ले आओ ।

चतुरे आए अरज करी, लाल चाह करें दीदार ।
लछमन उनका नाम है, है तालिब धनी निरधार ॥४॥

तब चतुरे ने श्री जी के चरणों में आकर अर्ज की कि हे मेरे धाम के धनी ! श्री लालदास जी/जो इस नगर में लक्ष्मण सेठ के नाम से प्रसिद्ध हैं, वे आपके चरणों का दर्शन करने के लिए अति व्याकुल हैं । यदि आप आज्ञा दें तो मैं उनको ले आऊं ।

हुकम हुआ श्री राज का, उनको बुलाओ सिताब ।
काहू काहू ने मने करी, फेर मेहर करी उनके बाब ॥५॥

वहां पर कई ऐसे भी लोग बैठे थे । जिन्होंने श्री जी को लालदास जी को बुलाने से मना किया कि वह तो अपने ज्ञान के अहंकार में रहते हैं, उन्हें मत बुलाइए तब श्री जी ने कृपा करते हुए कहा कि आप इस बात की चिंता न करें । तब उन्होंने चतुरे से कहा कि उन्हें बुलाकर ले आइए ।

आया बुलावन चतुरा, चला अपने संग लगाए ।
आये पहुंचे कदमों, भेंट करी बनाए ॥६॥

तब चतुरा पोहोकरना उसी समय बुलाने के लिए आए तथा श्री लालदास जी ने बड़े शिष्टाचार के साथ चरणों में शीश झुकाया ।

Nijanand App

देखत ही दीदार को, बड़ो जो पायो सुख ।
मन की कुलफत सब मिटी, भाग गया सब दुख ॥७॥

श्री जी के तेजोमयी स्वरूप के दर्शन करते ही श्री लालदास जी के मन को बहुत सुख हुआ तथा उनके मन की सारी मलीनता मिट गई तथा शान्ति मिली ।

भई चरचा सब ब्रज की, देखी सुनी सब कान ।
तब आय ईमान की, होय गई पहिचान ॥८॥

तब श्री जी ने चर्चा प्रारम्भ की । इस कालमाया के ब्रह्मांड की उत्पत्ति कैसे होती है और चौदह लोक पांच तत्व का महाप्रलय में नाश हो जाता है । उसके बाद अखण्ड योगमाया का वर्णन सुनाया फिर उससे आगे अक्षर और अक्षरातीत तथा श्री राजजी के आनन्द अंग की लीला सुनाई । आनन्द अंग को अक्षर की लीला देखने की और अक्षर को आनन्द अंग की लीला देखने की इच्छा प्रगट होने के कारण उनकी आत्माओं को कालमाया के ब्रह्माण्ड में लाकर ग्यारह साल और बावन दिन की लीला दिखा कर उस ब्रह्माण्ड का प्रलय कर योगमाया के अखण्ड ब्रह्मांड में जाकर नया वृन्दावन बनाया तथा वहां अपनी आत्माओं को बुलाकर रास की लीला दिखाकर उसे अखण्ड कर दिया । यह तीसरा ब्रह्मांड ब्रह्मसृष्टि की इच्छा पूरी करने के लिए बनाया । इस ब्रह्माण्ड का प्रारम्भ इस ब्रह्माण्ड में हुई प्रतिबिम्ब की लीला से हुआ ।

इस प्रकार से अखण्ड और प्रतिबिम्ब की लीला का वर्णन, जिसे व्यास जी जाग्रत बुध के न होने से नही बता सके, उसे सुनकर उन्हें पहचान हो गई तथा श्री जी पर ईमान ले आए ।

चार घड़ी चरचा सुनी, हुई खुसाली मन ।
फेर के लाल घरों आये, रहा कदमों दिल मोमिन ॥९॥

लगभग डेढ़ घंटे तक श्री जी से इस विषय पर चर्चा सुनने के बाद श्री लालदास जी घर पर आए तो सही परन्तु चित्त श्री जी के चरणों में ही रहा ।

फेर के चरचा सुनने, आये बेर दो चार ।
बाग में जिन्दादास कही, धाम पैठे बिना विचार ॥१०॥

श्री लालदास जी दो-चार बार चर्चा सुनने तो आये लेकिन श्री जी के स्वरूप की पूरी पहचान न होने से वे दुविधा में पड़े हुए थे । तब जिन्दादास जो श्री लालदास जी के बाग के माली थे, वे बाग में भ्रमण करते हुए लालदास जी से कहने लगे कि हे सेठ जी ! आप जहां चर्चा सुनने जाते हैं, उनकी आपने पहचान की है या नही या बिना पहचान के ही आप उन पर यकीन ले आए हैं । यदि आप आज्ञा करें तो मैं उनकी पहचान करा दूं ।

Nijanand App

फेर चरचा मारकंड की, कह दिखाया दृष्टांत ।
तब नजर खुली बातन की, देखी दृष्ट एकांत ॥११॥

जिन्दादास ने उनको मारकंड का दृष्टान्त बताते हुए कहा कि जिस प्रकार मारकंड ऋषि एक ताल पर तपस्या कर रहे थे । उनकी तपस्या पूरी होने से पहले ही नारद जी ने मारकंड जी से कहा कि आपकी तपस्या पूरी हो चुकी है । भगवान आपको दर्शन देने आने वाले हैं, उनसे यह मांगना कि हे भगवान ! मुझे माया भी पूरी दिखाइये तथा चरणों से भी दूर न कीजिए । जब नारायण भगवान साक्षात् आए तथा दर्शन देकर मार्कण्डेय ऋषि से पूछा कि पुत्र ! क्या चाहते हो तब मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि हे नाथ! मुझे माया भी देखनी है किन्तु आप अपने चरणों से भी दूर न कीजिए । पहले मुझे चन्दन-पुष्प से पूजन कर लेने दीजिए तब नारायण ने कहा कि जितने समय में तुम चन्दन-पुष्प से पूजन करोगे उतने में ही माया दिखा दूंगा । जैसे ही वे चन्दन घिसने के लिए बैठे तो नारायण ने मार्कण्डेय पर माया का आवरण डाला तथा उन्हें गहरी नदी में गोते खाते हुए दिखाया । उस ताल पर बैठे-बैठे ही मार्कण्डेय जी स्वयं को एक वस्त्रहीन स्त्री के रूप में देख रहे हैं तथा किनारे पर एक धोबी कपड़े धो रहा है । धोबी ने पूछा कि तुम कौन हो, कहां से आए हो और कहां जाना है ? और उसे पहनने के कपड़े भी दे दिए । मार्कण्डेय ऋषि उस नदी में गोते खाने के कारण अपनी मूल अवस्था को भूल चुके थे । वे कुछ भी उत्तर नही दे सके । तब धोबी समझ गया कि यह पानी में डूबने की बेहोशी में सब कुछ भूल गई है । उसने शादी के लिए आग्रह किया कि मैं भी बिना परिवार के हूं यदि आप चाहें तो मेरे साथ शादी करके जीवन निभा सकती हैं तो उस स्त्री के रूप में मार्कण्डेय ने शादी करना स्वीकार कर लिया । फिर क्या था? साल के बाद एक बच्चा पैदा हुआ । काम बढ़ गया परन्तु कोई चिन्ता नही की । दूसरे साल जब दूसरा बच्चा हो गया तो काम और भी बढ़ गया और घर मे खटपट हो गई । जैसे तैसे वह साल बीता तो तीसरे साल एक बच्चा और हो गया तब धोबी की पत्नी बच्चों की देखभाल में लग गई । खर्चा बढ़ गया, धोबिन काम में सहायता नही कर पाती थी । लोगों को कपड़े देर से मिलने के कारण लोगों ने अपने कपड़े दूसरे धोबी को देना शुरू कर दिया । जिससे धोबी और धोबिन में और खटपट होने लगी । चौथे वर्ष एक और बच्चा हो गया । अब दोनों में मारपीट भी होने लगी । एक दिन धोबी ने धोबिन को इतना पीटा कि उसने आत्महत्या का निर्णय कर लिया जैसे ही धोबी कपड़े धोने के लिए गया और उसकी पत्नी ने फांसी लगाने के लिए फंदा लगाया ही था कि ताल पर खड़े आदि नारायण ने देखा कि मेरे भक्त मार्कण्डेय ऋषि तो फांसी लगा रहे हैं तो साधु का रूप धारण कर, उन्होंने धोबिन के दरवाजे को खटखटाया । धोबिन ने समझा कि धोबी आ गया है । उनसे दरवाजे को जैसे ही खोला तो साधु को देखकर गालियां निकालनी शुरू कर दी तो साधु ने कहा कि हम मार्कण्डेय की कथा सुनाते हैं, तब हम भोजन पाते हैं और यह कहते हुए धोबिन के घर में घुस गए । धोबिन घर में घुसे साधु को देखकर तथा मार्कण्डेय की बात सुनकर बच्चों की तरफ इशारा करके बोली कि यहां चार मार्कण्डेय पड़े हुए हैं । किसकी कथा सुनाऊ? तब साधु रूप में आए नारायण वहां पर बैठ गए तथा मार्कण्डेय का पूरा दृष्टान्त कह सुनाया । तब धोबिन उस दृष्टान्त को सुनकर समझ गई कि यह सब मेरा ही प्रसंग है तब साधु के चरणों में गिरकर चिल्लाकर बोली कि हे भगवान ! मुझे बचाइए तब नारायण ने अपनी माया का आवरण हटाया तथा मार्कण्डेय ने अपने असल रूप को देखा तथा जैसे ही भगवान की और देखा तब भगवान ने पूछा कि क्या माया देखोगे? तब उन्होंने कहा कि हे भगवान । अब मैं कभी भी माया नही देखूंगा ।

यह दृष्टान्त देकर जिन्दादास बोला कि हे सेठ जी महाराज । मार्कण्डेय की तरह से आप भी माया में आकर धन एवं ज्ञान के अभिमान में भूल गए हो । स्वयं अक्षरातीत श्री राजजी महाराज हमें साधु के रूप में जगाने के लिए आए हुए है । यह दृष्टान्त सुनते ही श्री लालदास जी की आत्मा जागृत हो गई तथा अपने निज स्वरूप की पहचान करके वे श्री जी के चरणों में आए ।

Nijanand App

गीता और भागवत के, खोल दिये सब द्वार ।
आई वस्त अखण्ड, देखे धनी निरधार ॥१२॥

तब श्री जी ने गीता और भागवत के प्रमाणों से क्षर-अक्षर और अक्षरातीत की चर्चा सुनाई तो श्री लालदास जी को यह पूरी पहचान हो गई कि श्री जी ही हमारे धाम धनी है ।

आया जोस वस्त का, रही न कछु सुध ।
लौकिक दृष्ट उतर गई, आई जागृत बुध ॥१३॥

ऐसी चर्चा सुनने से श्री लालदास जी को अपने धन का और ज्ञान का अहंकार उतर गया तथा जागृत बुद्धि हृदय में आते ही आतम को जोश आया और जोश आते ही वे श्री जी के चरणों में बेसुध हो कर गिर पड़े ।

और सुध कछु ना रही, वही आवे याद ।
दृष्ट फिरी उतथें, अपनी जो बुनियाद ॥१४॥

जागृत बुद्धि के आते ही दृष्टि माया से हट कर मूल मिलावे में अपनी परआतम को देखने लगी और बार बार उन्हें परमधाम की ही याद आने लगी । उन्हें अपने घर बार की सारी सुध भूल गई । श्री जी के स्वरूप की पूरी पहचान करके उन्होंने तारतम ले लिया ।

इन समें कलयुग ने, बड़ा जो किया सोर ।
लोग जो उन मुलक के, उनों किया जोर ॥१५॥

राधा वल्लभी मार्ग के अनुयायियों ने जब श्री लालदास जी को भी श्री जी के चरणों में गया हुआ सुना, तो उन्होंने निन्दा करनी शुरू कर दी परन्तु उनके झूटे प्रचार से कुछ भी नही बना ।

कछु ना चला काहू को, रहे सिर पटक ।
निन्दा करी बहुतक, थी इत मदद हक ॥१६॥

उन्होंने श्री जी की निन्दा तो बहुत की किन्तु उनकी निन्दा का शहर में कुछ भी असर नही पड़ा । जहां साक्षात् श्री राज जी की मेहर थी, वहां माया का क्या चलता । सिर पटक कर ही वह रह गये ।

इन समें आइया, मोहनदास दलाल ।
राम दास वैद्य, ए भी हुआ खुसाल ॥१७॥

श्री जी के मुख से जागृत बुद्धि का अखण्ड ज्ञान सुनकर मोहनदास दलाल तथा रामदास वैद्य ने भी चर्चा सुनी तथा संशय मिटने के बाद वे भी श्री जी के चरणों में आ गये ।

Nijanand App

खटू मटू खत्री आये, और आया चतुर ।
और मंगल आइया, हुई खुसाली खूबतर ॥१८॥

खट्टू, मट्टू खत्री और चतुर भाई तथा मंगलदास ने भी चर्चा सुन कर तारतम लिया और सुन्दरसाथ में बहुत प्रसन्नता के साथ शामिल हुए ।

और भगत सामल, कुंवरजी और गोवरधन ।
सुकदेव और जेठा, और द्वारका सैंयन ॥१९॥

भगत सांमल जी, गोवर्धन भाई, कुंवर जी, सुखदेव भाई, जेठा भाई और द्वारिकादास जी भी श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए ।

रायचन्द्र बुला धीरा, और आये थिरदास ।
और साथी केतेक, ल्याये ईमान खास ॥२०॥

श्री जी की चर्चा से श्री जी के स्वरूप की पहचान करके रायचन्द्र, बुला भाई, धीरा भाई, और थिरदास भाई के साथ और बहुत से सुन्दरसाथ श्री जी के चरणों में आये ।

किसन बाई बसई, सेहेज बाई राम ।
वल्लभी चतुराई करें, चरचा में आराम ॥२१॥

किसनबाई, बसाई बाई, सहज बाई, रामबाई यह सब चर्चा सुन कर ईमान लायी । वल्लभाचार्य मत के कई अनुयायी तो चतुराई बहुत करते है परन्तु श्री जी के मुखारबिन्द से जब चर्चा सुनते है तो तारतम लेकर उनके चरणों में आ जाते हैं ।

और चिन्तामन के संग, आया केतेक साथ ।
तामें ईमान दाखिल वह भये, जाके धनियें पकड़े हाथ ॥२२॥

चिन्तामणि आचार्य के साथ उनके बहुत से शिष्यों ने तारतम तो लिया परन्तु उनमें जो खास परमधाम की आत्मायें थी, उनमें से उन्होंने ही श्री जी के स्वरूप की पहचान की कि ये हमारे धनी है ।

इत चरचा का मारका, बड़ा जो पड़िया आए ।
वल्लभी मार्ग के लोग, लड़नें को उठ धाए ॥२३॥

अब श्री जी की चर्चा से यह भेद खुल गया है कि यह मथुरा और बृज महाप्रलय में नाश हो जाने वाले है तथा योगमाया में दो श्री कृष्ण बाल मुकुन्द तथा बांके बिहारी अखण्ड हैं, किन्तु वे पारब्रह्म नही है तथा बृज और रास योगमाया के ब्रह्मांड में अखण्ड है । जागृत बुद्धि के इस ज्ञान से सत्य की पहचान होने पर श्री जी की ठट्ठे नगर में जय जयकार होने लगी और वल्लभाचार्य मत के कुछ अज्ञानी लोग श्री जी के साथ लड़ने के लिये आने लगे ।

Nijanand App

कलयुग डरा देख के, मेरे ए दुस्मन ।
मेरा कछु ना चले, ए मारत मेरा मन ॥२४॥

श्री जी के जागृत बुद्धि के ज्ञान की चर्चा सुन कर दूसरे धर्मों के गुरूजन घबरा गये कि श्री जी हमारे धर्म के दुश्मन हैं परन्तु इनके सत्य ज्ञान के सामने हम क्या कर सकते हैं । ये तो हमारे महत्व को ही खत्म कर देते हैं ।

गुसांई के बालक रहे, होय निंदा तिन में ।
वस्त को समझे नहीं, फरियाद लगी तिन सें ॥२५॥

राधा वल्लभी मत के आचार्य गोसाई जी महाराज अपने शिष्यों में निन्दा बहुत करते हैं । उनके शिष्य हकीकत के ज्ञान को समझे बिना ही श्री जी के चरणों में प्रश्न करते हैं किन्तु चर्चा सुन कर शान्त हो जाते हैं ।

मास दस यहां रहे, हुआ चलने का दिन ।
मौसम भई मसकत की, विदा हुये साथ मोमिन ॥२६॥

जब मस्कत में जाने का मौसम हुआ तो श्री जी १० माह टट्टे में रहने के पश्चात् जो सुन्दरसाथ बन्ध में आ गये थे उनको छुड़ाने के लिए अरब जाने की तैयारी करने लगे ।

अरज करी सब साथ नें, ए कारज करें हम ।
आप इत बिराजे रहो, ए कारज होवे हुकम ॥२७॥

तब टट्टे नगर के सेठ श्री लालदास जी तथा सभी सुन्दरसाथ ने विनती की कि हम मस्कत में बंध में पड़े सुन्दरसाथ का टैक्स चुका कर छुड़ा लाते हैं ।

तब कहया साथ को, उत है मेरा काम ।
क्या जानें किन कारने, मेरा जाना होत तिस ठाम ॥२८॥

तब श्री जी ने सुन्दरसाथ को उत्तर दिया कि जाहिरी बंध में बंधे सुन्दरसाथ को आप छुड़ा लायेंगे लेकिन न जाने श्री राजजी के हुकम से क्या कारज कारण बना है । मेरे ही वहां जाने से जागृत बुद्धि के ज्ञान से जो आत्मायें माया के बंध में फसी हैं वह छूट सकेंगी ।

बहुत विनती साथें करी, मानीं नाहीं कोय ।
तब आज्ञा पर धरी, कहा कारज कारण सोय ॥२९॥

सुन्दरसाथ ने श्री जी को मस्कत न जाने के वास्ते अर्ज विनती तो बहुत की लेकिन स्वामी जी ने जवाब दिया कि मेरे गये बिना माया में डूबी आत्माओं का काम नही होगा । इसलिए मुझे अवश्य जाना है । सुन्दरसाथ ने फिर आग्रह तो बहुत किया लेकिन फिर श्री जी के हुक्म पर ही धैर्य बांधा ।

Nijanand App

फेर ठट्ठे से लाठी बन्दर, नाव ऊपर चढ़े ।
तहां से पहुंचे मसकत, सरत थी वायदे ॥३०॥

तब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज नाव पर सवार होकर ठट्ठे से लाठी बन्दर होते हुए मसकत बन्दर पहुंचे ।

महामति कहे ए साथ जी, ए ठटठे की बीतक ।
अब कहों मसकत की, जो आज्ञा है हक ॥३१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि यह ठट्ठे नगर की बीतक है । अब श्री राज जी महाराज के हुकम से मस्कत नगर में जो बीतक हुई, उसे कहता हूं ।

(प्र०-२५, चौ०-१०८२)

आए पहुँचे मसकत में, उतर नाव से ।
कांठे दुकान महाव जी की, आए बैठे उन में ॥१॥

मस्कत में पहुँचकर श्री जी नाव से उतरे । समुद्र के किनारे वही पर महाव जी भाई की दुकान थी। श्री जी वही पर आकर बैठ गए ।

पूछी खबर उन नें, उठ के मिले धाए ।
कुसल खेम पूछन लगे, भले आप पहुँचे आए ॥२॥

महावजी भाई को जब श्री जी का पता चला तो वे उठकर दौड़कर मिले । सब कुशलता का समाचार पूछे तथा बोले कि बहुत अच्छा हुआ जो आप यहां पधारे हैं ।

इत बड़ो आदर कियो, लौकिक नाते से ।
आदर भाव करने लगा, खबर बन्द की पूछी इन समें ॥३॥

महाव जी भाई सांसारिक नाते से बड़े आदर भाव से सत्कार करता है । तब श्री जी ने स्वयं महाव जी भाई से बन्ध में आए सुन्दरसाथ के बारे में पूछा ।

विस्वनाथ संग था, श्री बाई जी की दई खबर ।
रूपा राधा संग थी, धाए के पहुंची घर ॥४॥

महाव जी भाई के द्वारा बन्ध की खबर देने पर विश्वनाथ जो लाठी बन्दर से श्री जी के साथ आए थे । उन्होंने बाई जी की सब सूचना लाकर श्री जी को दी । वहां रूपा और राधा बाई श्री बाईजी के साथ थी । जब उन्होंने श्री जी का आना भी सुना तो दौड़कर महावजी भाई के घर आई ।

Nijanand App